मुक्ति प्रसंग

— राजकमल चौधरी

दोनों आँखों की ज्वालामुखी पिघल जाने के उपरान्त मैं उसकी बाँहों में
यूनिसेफ-एम्बुलेन्स की दुर्गति मेरे नशे में डूबी हुई
मैं ही प्राप्त करूँगा
        इस नगरवधू को महाश्मसान बनाने का श्रेय
मेरे ही रक्त के शंख चक्र सामुद्रिक स्वाद में
जलते हुए नाम मेरे ओठ दुहराते हैं वही एक शब्द बार-बार बीजमन्त्र
वही एक कामतन्त्र
छत से पलंग तक झूलती हुई रस्सी का फन्दा और सर्जिकल अस्पताल
तक की इस स्वप्न-यात्रा में कहता है उपाध्याय
        कुछ नहीं होगा तुम्हें
        वैसा जो नहीं हुआ है अब तक मर्मान्तिक किन्तु
मेरा चेहरा मेरी गरदन मेरे कन्धे काले पत्थर की अपनी बाँहों में
समेट कर वह मुस्कुराती है। वही होगा वही होगा
रोक लिया गया था
अब तक जिसे विपरीत ऋतुओं और मांगलिक नक्षत्रों के कारण…
        मसूरी-हिल की नीली दरारों में योगासन
        करती हुई देवकन्याएँ
        बालीगंज-झील के ओवरब्रिज पर सोये हुए लावारिस
        नीले ऑक्टोपस
        कोकाकोला के नीले ग्लास में
        रम डालकर देह की राजनीति करती थी
        मंजू हालदार
        नीली नदी थी मेरे गाँव की उन्मादिनी
        नीली उग्रतारा
उपाध्याय कहता है कुछ नहीं होगा वापस चले आओगे तुम
नदी के किनारे से वापस चले आना तुम्हारी नियति है हर बार प्रत्यागमन
वह आदिवर्ण वह नीलापन
तुम नहीं पाओगे अपराजिता कभी नहीं
…मैंने नहीं ऋषि शंकराचार्य ने सागर-तट पर प्राप्त की थी
जाँघों में अग्निपिण्ड वाणी में स्तुति-शब्द आँखों में

ज्वालामुखी पिघल जाने के उपरान्त
        वह नीलकन्या

फिर भी मेरे ही रक्त के सामुद्रिक स्वाद में सने हुए मेरे ओठ दुहराते हैं
वही एक शब्द बार-बार वही एक नाम वही एक नदी
वही एक नीली उग्रतारा
जिसे मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ अपनी आन्तरिक कृतज्ञता
        इस दशमुख विध्वंस के लिए
सड़ी हुई आँखों का मवाद ईथर की गन्ध किडनी में
कैन्सर के रक्तश्वेत पुष्प
चौराहे पर मरा हुआ रक्तश्लथ कुण्डलिनी का काल-सर्प खण्ड-खण्ड
खण्डित ध्वजा-दण्ड खण्डित मूर्तियाँ
अस्थि-सीमाओं की लक्ष्मण-रेखाएँ नहीं रहीं दृष्टिदोष
मृत हुए
मेरे दशाश्वमेध की सभी अश्व नौकाएँ डूब गयीं गंगाजल में
रबर के लाल-बैंगनी ट्यूब नाक में नसों में
मेरे पेट में केवल वमन
नींद नहीं क्षुधा नहीं पागलपन केवल वमन यह दुराग्रह
उपदंश-महादंश की नरक कुण्ड बीजात्माएँ
        अब भी मात्र उस एक नीलकन्या में मेरे लिए
        परिणत हों
मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ उसको मात्र एक उसको निर्विकार
इस दशमुख विध्वंस के लिए
क्योंकि रह जाता अखण्डित ध्वजा-दण्ड तो मैं अपने ही
घटनाविहीन पूर्वजन्म के मरघट में
भटकता रह जाता
अपनी पितृशिला ढूँढ़ता हुआ अकेले और सेन्ट्रल-होटल में
मिले हुए अतीत-यात्रियो के साथ
अपनी विधवाओं के साथ गंगासागर की तीर्थयात्रा
प्रजा-स्थानों के लिए
प्रजा-जनों के निरुपाय जुलूस में मौसमी झंडे थामे हुए...
आकाशवाणी से मौसम और युद्ध-शंकाओं की
नपुंसक सूचनाएँ
दैनिक समाचार पत्रों में वियतनाम हिन्देशिया कांगो रोडेशिया

अपने देश में एटम बम बनेगा नहीं बनेगा
नागरिक भद्र महिलाएँ
अपनी हरी-लाल-पीली-सफेद-काली छतरी के बदले अब से
लूप-छतरी या एटम-छतरी इस्तेमाल करें

ऑपरेशन-टेबुल पर ईथर-निद्रा में अथवा संभोग की चरम परिणति में
स्वाभाविक सुविधाप्रद होगा मेरा मरण
जाँघों के ऊपर ऊष्ण-प्रदेश के महारोगों से ग्रस्त भूख
लोकतन्त्र अनिद्रा राशनकार्ड
रेल-दुर्घटनाओं पशु-मैथुन से ऊबकर
मैंने यही निर्णय किया
उसके पहले अर्थात् एम्बुलेन्स में उसके आगमन से पहले किन्तु
कैसे यह सिद्ध कर लिया जाएगा मैंने उसे देखा
कामोत्तेजना में अपनी रक्त-नलिकाओं के
विपरीत प्रवाह में
और कविता में —जटिल थे किन्तु लांछित-अवांछित भी थे
कोई काव्य-खण्ड या प्रतिमा बनाने के योग्य नहीं थे अनुभव
संगीत रंग पीड़ाएँ मेरे अन्तराल में
रोगदग्ध परिस्थितियाँ
मैं अपने जर्जर शरीर से तेरह हजार मील दूर निर्वासित मूँगे की टूटी हुई माला
अष्टधातु की अँगूठी तीर्थजल की खाली बोतल में बन्द
सम्मोहित वशीभूत प्रेत
अपनी अतीन्द्रिय चेतना की अन्तहीन यात्रा-प्रक्रिया से पलायित
अभिप्रेत
इस प्रकार स्थान-पात्रों में घुलमिल जाता था संगीत
बन जाता था जुलूस भूख-मार्च हाहाकार
रंग में अल्कोहल भाषा में केवल बीते हुए गलित व्रण केवल चीत्कार
आम-चुनाव में किस जाति को करना होगा मतदान
कौलिक पूजागृह से चुरा कर बेचे गए
शालिग्राम के बदले
खरीद लाए गए शक्तिपीठ योनिमुखों में सात नरकों की दुर्गन्धियाँ
भस्म हो गयीं सती-दहन दुर्गन्धि में धुएँ में
इक्कीस साल पहले

इड़ा पिंगला सुषुम्ना मेरी जुड़वाँ बहनें
अन्तिम उपहार देकर मुझे नरहत्या क्षुधा मदिरा निद्रा नहीं केवल वमन
शाम-बाजार और टालीगंज के फुटपाथों पर बिकता हुआ
मेरा अवचेतन
और अब इतिहास-पुस्तक की तरह इस ऑपरेशन-टेबुल पर
रोशनी के प्रज्वलित गोलाम्बर में खुला पड़ा हुआ मेरा अस्तित्व
एक बुझा हुआ लैम्पपोस्ट मेरी दो आँखों में
जाँघों के बीच चौराहे पर मरा हुआ रक्तवर्ण साँप एक मरी हुई
नदी मेरे पाँवों में लिपटी हुई एक स्त्री
बरामदे पर खम्भे की आड़ में आत्महत्या करती है कहती है लेकिन अब
भी
मुझको ही मार्कण्डेय-मुनि
मृत सागर में वटवृक्ष के नीले पत्ते पर सोया हुआ
वह आदिशिशु
मैं ही उसे बाँहों में उठाकर लाऊँगा
पृथ्वी पर…

मैं नहीं जानता लेकिन यह स्त्री कौन है मेरे चतुर्दिक सफेद गाउन सफेद
मास्क सफेद प्लास्टिक-दस्तानों में छिपे हुए
मेरी छाती और मेरे पेट पर झुके हुए कौन हैं इतने सारे लोग
मैं कुछ नहीं जानता हूँ
स्त्रियों नदियों बीमारियों भूख जन्म अपराधों ईश्वर मृत्यु दास्तोवस्की
हिरोशिमा विधान-सभाओं के विषय में कुछ नहीं
आदमी क्यों पार करता हैं युद्ध क्यों परिवार नियोजन
क्यों बर्लिन की दीवार
क्यों देशप्रेम क्यों अफीम की गोलियाँ क्यों चैप्लिन की फिल्में
क्यों ताशकन्द-सम्मेलन क्यों रीढ़ की हड्डियों में
गैंग्रीन
मादाम नू क्यों क्यों दास-कैपिटल
क्यों सुकरात क्यों सेगाँव की बौद्ध भिक्षुणियाँ जल मरती हैं
क्यों गार्गातुआँ की कहानियाँ क्यों कश्मीर के लिए
सेनाएँ क्यों अजन्ता
क्यों एक ही युद्ध मेरी कमर की हड्डियों में और कभी
वियतनाम में

होता है क्यों इन्दिरा गाँधी क्यों तुम वह
मैं क्यों कुछ नहीं कुछ नहीं
अतएव मैने फोन किया ब्लैक आउट के अँधेर में उस पार
अपने रेडियोग्राम में डूबी हुई लड़की ने बताया सच हमारी माँ मर गई कल
रात सोफे पर लेटी थी चुपचाप मर गई
कोई कपड़ा नहीं है उसकी देह में सिर्फ एक दाग है स्तनों के
बीच सीने पर
डूबी हुई लड़की को कोई उत्तर दिया नहीं मैंने केवल
पिछले साल भर के अखबार
रेडियोसेट कवियों और प्रकाशकों के पत्र टेलीफोन पुरानी पांडुलिपियाँ
मनी-प्लान्ट की लताएँ बरसों से बन्द दीवार-घड़ी
कैलेन्डरों में सोये हुए बच्चे हरिन फूल
चिड़िया झरने पहाड़ी गाँव औरतें चाय के बगान
बचपन का प्यारा अलबम अपनी छोटी माँ का हाथ थामे हुए चकित मैं
हरसिंगार के नीचे खड़ा हूँ
पराजय के तीस वर्षों में एकत्र की गई धर्म सेक्स इतिहास
समाज परिकल्पना ज्योतिष की किताबें डाक-टिकट
सिक्के सोवेनिर
मैं बड़े डाकघर के बहुत बड़े लेटरबॉक्स में डाल आया
वापस आकर अपनी स्त्री से मैंने कहा पुलिस पत्रकार कवि-मित्र पार्टी-
कामरेड
कोई भी मिलने आए सूचित करना है—
सबके लिए सबके हित में अस्पताल चला गया है
राजकमल चौधरी
लिखने पढ़ने सोने गाँजा-अफीम-सिगरेट पीने मरने का अपना एकमात्र
कमरा
अन्दर से बन्द करके दोपहर दिन के पसीने पेशाब वीर्यपात
मटमैले अँधेरे में लेटे हुए
धुआँ क्रोध दुर्गन्धियाँ पीते रहने के सिवा
जिसने कभी कोई बड़ा काम नहीं किया अपनी देह
अथवा अपनी चेतना में
इस उम्र तक
जटिल हुए किन्तु कोई भी प्रतिमा बनाने के योग्य नहीं हुए उसके अनुभव

नहीं निद्राएँ और नहीं पैशाची संभोग
यातनाएँ भी नहीं···
मेरे फेफड़ों के अन्दर मलत्याग की वैष्णवी मुद्रा में बैठा हुआ
नकाबपोश नकली ईश्वर
देखता रहा है लगातार ऊँघती आँखों से मेरी स्त्री का अवरुद्ध गर्भ विवर
कभी-कभी उसके झुर्रीदार बनमानुष पंजे
मेरा व्याकरण छूते हैं
दोनों पाँवों से पैडिल मारता है वह मेरी किडनियों को कभी-कभी
किसी भी नरभक्षी गुफा में कोकेन में किताबों में
किसी भी लाश पर मुड़े हुए घुटनों में
मुझको विक्षित अथना बेहोश करने से पहले नीचे उतरता हुआ अँतड़ियों
को
कालो सीढ़ियों में अचानक गायब हो जाता है वह ईश्वर
वह ईश्वर सिफलिस भस्मासुर लाओ-त्से इस कुरुक्षेत्र में पराजित
दुर्योधन मेरे शरीर के लावारिस
पब्लिक-पार्क में

और/अथवा

वियतनाम में उड़ी-पुंछ में यू० एन० ओ० में तिब्बत बस्तर काले अफ्रीका
में
वह आगे बढ़ता है राइफल का निशाना साधने के लिए
मेरे ही कलेजे पर मस्तिष्क पर
वह मेरा सैनिक वह मेरा जासूस वह मेरा ईश्वर
नागालैण्ड में विदेशी बमों से निरीह यात्रा-रेलगाड़ियाँ उड़ाता है
शान्तिपूर्वक
शान्तिपूर्वक कभी भेजता है कोरिया कभी क्यूबा कभी पाकिस्तान
कभी वियतनाम कभी अल्जीरिया
कभी अपनी संस्कृति कभी अपनी मशीनें अपने टैंक-जहाज-हथियार
मूल्य-नियन्त्रण के लिए कभी उड़ीसा में दुर्भिक्ष
काहिरा में कभी शक्ति-सम्मेलन युद्ध अणु-आयुध नियन्त्रण के लिए
कभी दण्ड कभी साम
कभी ईसामसीह और कभी वेश्याओं के नाम

निम्फेट-लड़कियों के बलात्कार हत्या पशु-यन्त्रणाओं के संगीतस्वर टेप में
साग्रह भरता है इयान ब्रैडी कवि है

चार टाइपिस्ट लड़कियाँ सचिवालय की छत से नीचे कूद जाती हैं
एक दिन एक साथ
चन्द्रमा के वक्षस्थल पर बैठकर चित्रांकन करता है सर्वेयर-विमान
वैज्ञानिक राजनेता और स्त्री अंगों के व्यापारी
कुल तीन ही प्रभु-जातियाँ रह गई हैं अब स्वयंभू अस्तु
मैं क्रीतदास हूँ।
प्रभु-जातियों के दासों का दासानुदास मेरे लिए
चिड़िया हरिन फूल झरने नदी पहाड़ी स्त्रियाँ कच्ची सड़कें और गाँव
नहीं रह गए हैं
रह गए हैं अपने शरीर के क्षत-विक्षत मांसपिड—मैं
केवल मांसपिंड किन्तु सोचता रहता हूँ
ईश्वर और सरकारी जासूसों के बारे में चुपचाप सोचता रहता हूँ नहीं
यहाँ नहीं मैं इस कटघरे में नहीं साक्षी दूँगा स्वीकार
नहीं करूँगा औरों के अपराध
मेरे वकील और मेरे न्यायाधीश यहाँ नहीं उस सफेद ठंढे
कमरे में
प्रतीक्षारत हैं मेरे लिए यहाँ नहीं बोलूँगा
सफाई के वकीलो अभी मैं चुप हूँ और अभी मैं चिन्ताग्रस्त हूँ
केवल यह तमाशा देखता हूँ मैं अभी लोग किस तरह
ऊँची दीवारों पर सीढ़ियाँ-दर-सीढ़ियाँ लगाकर
उस पार कूद जाते हैं आँखें बन्द किए पेट और पिंडलियों पर रक्खे हुए
दोनों हाथ
और हाथों में अपना ही कटा हुआ सिर आत्मरति और
परपीड़ा के लिए
फाइलों-रजिस्टरों की बन्द खिड़कियों में छिपकर काली-सफेद रोटियाँ
निगलते हैं किस तरह किस तरह अपने मालिकों के लिए
रखते हैं कन्धे पर राइफल
माथे पर आय-करों के बही-खाते दिमाग में व्यापारिक रहस्य व्यक्तित्व में
लचीलापन बाजार-दरों का रोकड़ों का
गृहस्थ पुरुषों गृहस्थ स्त्रियों गृहस्थ परिवार-आयोजनों के
जनतान्त्रिक सम्बन्धों को समझ लेना
अनिवार्य है
मेरे देश और मेरे मनुष्य का भविष्य निर्धारित करने के लिए अतीत
निर्धारित करने के लिए

मैं इतिहास-पुस्तक की तरह खुला पड़ा हुआ हूँ
लेकिन मेरा देश मेरा पेट मेरा ब्लाडर मेरी अंतड़ियाँ खुलने से पहले
सर्जनों को यह जान लेना होगा
हर जगह नहीं है जल अथवा रक्त अथवा मांस
अथवा मिट्टी
केवल हवा कीड़े जख्म और गन्दे पनाले हैं अधिक स्थानों पर इस देश में
जहाँ सड़कर फट गई हैं नसें वहाँ हवा तक नहीं
ऊपर की त्वचा चीरने पर आग नहीं निकलेगी नहीं धुआँ
जठराग्नि···दावानल···
सब बुझ गए अचानक पहले पन्द्रह अगस्त की पहली रात के बाद
अब राख ही राख बच गया है पीला मवाद

ग्यारह बजकर उनसठ मिनट पर हर रात शहीद-स्मारक के नीचे नंगी
होती है
पागल काली एक मरी हुई स्त्री
उजाड़ आसमान में दोनों बाँहें फैलाकर रोने के णिए
रोते हुए सो जाने के लिए पानी और अनाज के देवताओं से भीख माँगती है
तिरंगा फहराने के अपराध में मार डाले गए
1942 के छात्रों के नाम पर
बारह दफा उसे चुप करती है राज्य-सचिवालय की आदमकद घड़ी
कुल एक मिनट बाद इस नाम पर कि पाँच लाख
पच्चीस हजार छह सौ मिनटों के निर्मम यन्त्र-चक्र में होते हैं
उत्पादित अनायास
एक सौ बीस लाख पच्चीस हजार भारतवासी
जनसंख्या के ध्रुवमुखी ग्राफ में भारत-भाग्य-विधाता चूहों से
कम खतरनाक नहीं होते···
अतएव अरण्य-रोदन सुनकर मैंने तय किया था
स्मारकों और सचिवालयों को हमेशा के लिए भूल जाऊँगा
लेकिन
वह पागल काली मरी हुई आतंकित अनगढ़ स्त्री चिपकाऊँगा
अपने ओठों में उसके ओठों में अपने शब्द
वाक्य भाषाएँ
अपने मुहावरों से उसकी बंजर धरती को नहलाऊँगा
कविता लोकतन्त्र दोनों के लिए सुविधाजनक-स्वास्थ्यदायक यही होगा

बस्तर नागालैंड कालिम्पोंग हजारीबाग की
काली पथरीली चट्टानें
फ्री स्कूल स्ट्रीट अथवा पार्लियामेन्ट स्ट्रीट में मूर्तिमान स्थापित करना
करने लायक और क्या बच गया है कर्म
धारण करने लायक और क्या रह गया है अपना धर्म
आकण्ठ डूब गए हैं
जितने भी थे प्राचीन सत्कार्य राजनीतिक सती विधवाओं की संस्कारी
लोक-संग्रहकारी आत्महत्याओं में
शवदाह के लिए उपयुक्त हैं निजी सेक्टर के नृसिंहों की
जनजंघाएँ
स्थान-काल-पात्र सब न्यायिक नैयायिकों के एक्ट बिल बजट में
सिमट आए हैं दूषित-दुर्गन्धित

···जीना चाहते थे जीवन धारण किए रहना चाहते थे यही था
बालखिल्य-ऋषियों का पाप इसीलिए उन्हें बार-बार
चौदह बूँद मात्र दूध के लिए
        लटकना
        पड़ता
        था
लोकवृक्ष पर अटके हुए चमगादड़-स्तनों में
अपने रोग अपनी भूख अपनी नींद अपने युद्ध में प्रत्येक आदमी
बालखिल्य-ऋषि है अपने अन्दर
किसी चमगादड़ मन्त्री-उपमन्त्री अन्नपूर्णा उग्रतारा की एक मूर्त्ति
अपने घर अपने मन्दिर में स्थापित करता है
अपने पाँवों में बाँधता है एक तक्षक-साँप अथवा एक रक्तधारा-नदी
भागीरथ के वंशज इस पुण्यदेहा जाह्नवी स्पर्श के बिना
मोक्ष नहीं पाएँगे
और अब 1966 में स्मरण करने से क्या लाभ है जाह्नवी के सहस्त्रों पुत्र
मार डाले गए थे तीन रंगों का एक चिथड़ा
अपने ही रक्त से रंगे गए आकाश में फहराने के लिए
चौबीस वर्ष पहले जो बीत गया है उसे दुहराया क्यों जाए
पाठ्यपुस्तकों में अथवा दलालों के द्वारा लिखे गए इतिहासों में
इस नाटक के प्रारम्भ में ही अतएव
अपने कवि से कहना चाहता था मैं आत्मरक्षा के लिए

आओ प्रणति मुद्रा में
इस मूर्त्ति के सम्मुख झुक जाएँ साष्टांग आत्मसमर्पित
स्वीकार कर लें इस युग के समस्त पाप
सीता और अहल्या से अब तक की सारी भ्रूण-हत्याएँ हमने की हैं
हमने ही असुरों अग्निपिंडों चन्द्रमाओं कुमारी-कन्याओं से
किया है देवता-ब्राह्मण रक्त-तर्पण
दधीचि-अस्थियों की प्रभुसत्ता के दासों की हत्या में उपयोगी किया है
गलियों दूकानों कार्यालयों कारखानों राजभवनों के अहाते में
हड्डियाँ चबाते हुए सारे श्वान-पुरुष
रक्त-मांस बेचते हुए
हमारे आत्मज हैं हमारा ही रक्त वीर्य मज्जा रोग है उनमें
साढ़े दस हजार वर्षों के अथक परिश्रम से
इस ऊष्णगर्भा उर्वरा धरती को मरघट स्वेच्छानुसार हमने ही बनाया है
मनु शतरूपा आँगन में सत्ता का विषवृक्ष
हमने ही लगाया है
आओ इस राजभवन में इस कारागृह में अतएव चिन्ताविमुक्त हो जाएँ
उतार डालें अपने चेहरे अपनी नकाब
अपना इतिहास-कवच अपना वर्तमान शिरस्त्राण
नग्न निःशस्त्र हो जाएँ ग्यारह बजकर उनसठ मिनट के सामने
अपनी मुट्ठियों में थामे हुए अपना व्याकरण
पुस्तकालयों विश्वविद्यालयों के चौराहों पर खड़े हो जाएँ सुनें
नगरवासी सुनें
सम्राट हर्षवर्द्धन आज वापस लेंगे प्रजाजनों से राजपाट
अन्नसंग्रह स्वर्ण रथ माणिक सेना मुद्राएँ
सारा कुछ जनता से वापस लेकर अर्पित करेंगे संसदीय अधिनायकवाद के चरणों पर
नीले काँच का फूलदान है मेरा देश
नये हर्षवर्द्धन-जयवर्द्धन के लड़खड़ाते पाँवों की ठोकर से
टूटकर बिखर जाता है युद्ध और व्याधियों का इस वन्ध्या ऋतु में
शीशे के बेडौल बदरंग टुकड़े
मेरी देह की काली गुफाओं में धँसते हैं मेरे अन्दर अनायास वह
पौराणिक सर्प आकाशवाणी के राष्ट्रीय गीतों से
लहूलुहान हो जाता है
फिर भी गर्भान्धों की दास वृत्ति पुष्पमालाएँ शिष्टाचार देशभक्ति कोकेन

लाता है नसों में नाभिरस-कस्तूरी-संचार

रोशनी की गन्ध मांसपिंडों की वेद-ध्वनियाँ

रंगों की आकृति वर्णों के दस आयाम

देह की राजनीति

देह की राजनीति से विकट सन्निकट और कोई राजनीति नहीं है संजय

अन्न और अफीम की राजनीति यहीं शुरू होती है

जन्म लेता है यहीं मृग-मारीच

लोक-सभा में अन्न-मन्त्री कहते हैं बसते हैं कोई पाँच अरब चूहे

इस देश में

बजट के अंकों टैक्सों के रेखागणित में डूबे हुए इस देश में चूहों की

जनसंख्या सबसे भयानक प्रश्न है

लूप का इस्तेमाल करना चाहिए निरन्तर आत्मसंयम के लिए

इस प्रश्न पर नियन्त्रण के लिए

यह प्रश्न ही है हमारा वर्तमान

केवल वर्तमान में जीते हैं अब समस्त प्रजानन

मर जाते हैं अतीत में और भविष्य में मर जाते हैं

भीड़ जुलूस लाठी-चार्ज जन-आन्दोलन आम सभाओं के श्रोता वक्ता भोक्ता

गेहूँ के सिवा कोई बात नहीं कहते

आदमी चन्द्रमा को बना ही डाले अपना उपनिवेश

आदमी ईश्वर शैतान धर्म नीति से स्वाधीन हो जाए क्या होता है

आदमी लिखे एब्सर्डिटी का दर्शनविधान

आदमी सुदूर दक्षिण वन जातियों में ढूंढ़ता रहे येज-पौधों की समाधि

आत्मसाक्षात्कार

आदमी वर्ल्ड-बैंक से तीस करोड़ डालर ले आए

आदमी खुद बिके अथवा बेच ही डाले अपनी स्त्री अपनी आँखें अपना देश

मगर भीड़ अब खाने के लिए गेहूँ

और सो जाने के लिए किसी भी गन्दे बिस्तरे के सिवा कोई बात

नहीं कहती है

प्रजाजनों के शब्दकोश में नहीं रह गए हैं दूसरे शब्द दूसरे वाक्य

दूसरी चिन्ताएँ नहीं रह गई हैं

किन्तु भीड़ से विच्छिन्न असंपृक्त रहकर भी भीड़ से मुक्त मैं हो नहीं
पाता हूँ

मुक्त हो जाना कविता से पहले और मृत्यु से पहले

मुक्त हो जाना असंभव है

पेथेडिन इन्सुलिन दवाखाने बच्चों के स्कूल में फीस क्षमा कराने के लिए
नींद के लिए सिनेमाघर राशन की दूकान रेडियो-स्टेशन में
इन्दिरा गाँधी के बचपन पर वार्तालाप दुर्गा-समारोह
रामकृष्ण-आश्रम में
सरकारी दूकान से गाँजा अफीम और खरीदना 50-नम्बर की शराब
आय-कर विभाग को लिखना एक ही जवाब
इस उम्र तक दो हजार रुपयों से ज्यादा किसी साल मेरी हुई नहीं
किसी तरह
आमदनी चायखानों में बहस
कभी अपने आदमी कभी पराई औरतों के बारे में
पुस्तकालय रेल-यात्रा श्मशान अपने अकाल-मृत सम्बन्धियों के अस्थि-फूल
लाने के लिए जुलूस के साथ
चलता हुआ मैं अपने गाँव की नदी का नाम भूल जाता हूँ
बालीगंज-झील के अँधेरे में जकड़ लेते हैं
मुझे नीले ऑक्टोपस
शेयर-बाजार की चढ़ती-उतरती सीढ़ियाँ लहूलुहान कर देती हैं मेरा चेहरा
योगासन करती हुई देवकन्याएँ फ्री स्कूल-स्ट्रीट में
शहर की सारी बीमारियाँ तोहफे में देती हैं मुझे बिना माँगे
बिना माँगे मैं टाइपराइटर-मशीन
बन जाता हूँ
डलहौजी-स्क्वायर के दफ्तरों का दफ्तरों के मालिकों का मुखपात्र
कभी-कभी कामू कभी-कभी सार्त्र मगर
अब भी याद आता है लिफ्ट से चढ़ते हुए और
लिफ्ट से उतरते हुए नौकरी की दरख्वास्तें इन्टर्व्यू की कतारें भरते हुए
मेरे दोस्त अपनी पत्नियों के सहज सतीत्व पर निर्विकार फिर से
विश्वास करने लगे हैं

हँसने लगता हूँ मैं लिफ्ट के नीचे
हवड़ा-ब्रिज के नीचे
महारानी विक्टोरिया की महाकाय मूर्त्ति के नीचे खड़ा होकर
मैं हँसने लगता हूँ
हँसता हुआ गाने लगता हूँ भारत-भाग्य-विधाता
जय हे जय हे

मुझे पकड़ लेती है अपने साथ ले जाती है लालबाजार के सवाल-घर में
भारत की शान्तिप्रिय पुलिस···

ऐतिहासिक मूर्त्तियों का शील-भंग अपराध है गुरुतर
अपराध है
शहीद-स्मारक के नीचे रोते हुए नंगे हो जाना निरपराध रहने के लिए

जिसे बेडौल टुकड़ों में बाँटकर अलग-अलग चाहते हैं
भोग करना बनिये-सौदागर
इस दुनिया की सबसे नंगी सबसे मजबूत औरत का नाम है वियतनाम
उत्तर वियतनाम और दक्षिण वियतनाम
उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया
सफेद अफ्रीका और काला अफ्रीका
पूर्वी जर्मनी और पश्चिमी जर्मनी
पाकिस्तान और हिन्दुस्तान
सफेद अमरीका और काला अमरीका
जॉन्सन का अमरीका और एलेन गिन्सबर्ग का अमरीका
इन्दिरा गाँधी का हिन्दुस्तान
और मलय रायचौधुरी का हिन्दुस्तान
इस दुनिया की प्रत्येक मजबूत औरत नंगी और दो टुकड़ों में बँटी हुई
यह औरत मेरी माँ और मेरी बीबी मेरा देश और मेरी जिन्दगी
ईसामसीह की आधी देह पेकिंग में
और आधी देह मास्को न्यूयार्क में क्रॉस पर लटकी हुई
और बाकी शहरों में
कवियों की शब्दावली में लिखे गए शान्ति के संयुक्त वक्तव्य
हाइड्रोजन-बम परीक्षण में पंख फड़फड़ाते हुए
कबूतरों की मौत मर जाते हैं
और बाकी शहरों में राजनीतिक वेश्याओं ने पीला मटमैला अंधेरा फैला
रक्खा है
अपनी देह को उजागर करने के लिए
नई दिल्ली में और ढाका-कराँची में अब कोई फर्क नहीं है
कोई फर्क नहीं है एक गुलाम-शहर से दूसरे गुलाम-शहर में गोश्त और
किताबें और धर्म-प्रवचन
एक साथ बिकते हैं एक ही कीमतों में बिकते हैं
और गुलाम-शहरों का एकमात्र एकमात्र बच गया है लोकनायक अब
007 जेम्स बॉन्ड
चीनी अजदहे के पेट को चीरकर बाहर खींच लाएगा

हमारे देश की चौदह हजार पाँच सौ वर्गमील पुण्यभूमि वही केवल वही
नायक है 007
नायिका है किसी भी फिल्म नौटंकी नाटक हवामहल जैनेन्द्र
इयान-फ्लेमिंग को

वह स्त्री जो हर अध्याय में एक बार
अथवा अन्तिम अध्याय में सौ बार नंगी होती है बहुजन-हिताय
और हमारे भाग्य-विधाता डॉलर रूबल पौंड
क्षेत्रों की भिक्षाटन-यात्राओं में क्रमशः निर्लज्ज पारंगत होते
जा रहे हैं साहसी

और लॉकहेड-15 प्रति घंटे पैंतालीस सौ मील उड़ता है
और एशिया की मादाम नू योरप के जंगलों में अपनी लड़की के साथ
खो जाती हैं
मोराविया की दो औरतें केवल दो औरतें
और परमवीर चक्र स्वीकार करते हुए अपने मार डाले गए पति के
शौर्य-विक्रम की

बातें करती है कविता त्यागी
और हिन्दुस्तानी रुपये पर छापी हुई है जवाहरलाल नेहरू की तस्वीर
और इस तस्वीर की कीमत अभी तक
कुल 36.5 प्रतिशत नीचे गिरी है हमें धन्यवाद करना चाहिए देशी सिंडिकेट
और विदेशी विश्वबैंक को
और रुपये के अवमूल्यन के साथ भारतीय संस्कृति और सुन्दरता
मूल्यवृद्धि करती जा रही है अमरीका-योरप में
बलवन्त गार्गी आम के पंजाबी पेड़ न्यूयार्क में लगा आते हैं
बीटल्स-लड़के बजाते हैं लगातार
रविशंकरी सितार

सोलन के तीसरे पाइन्ट में अपने गाँव की बातें शुरू करते हैं
फणीश्वरनाथ रेणु
कमली···ताजमनी···नैना-जोगिन···
तीसरी बोतल में अरुण भारती अपनी फिल्मों का सहनायक बन जाता है
फ्रेजर रोड की बड़ी दूकानों से इत्र की शीशियाँ
और फूलदान खरीदने के लिए
तीसरे ग्लास में शम्भूनाथ मिश्र कहता है झूठ है साहित्य इतिहास प्रेम
साथ चलने के

सारे वादे झूठ हैं सच है केवल गले में लटका हुआ ताबीज और वह
मीरा और संजय के पास लौट आता है
अतीत अथवा भविष्य की ये व्याख्याएँ देखने-समझने के लिए किन्तु
मैं कभी तीसरे ग्लास तीसरे पाइन्ट तीसरी बोतल की
तीसरी कसम का गुलफाम नहीं हो पाता हूँ अपने इस गतिहीन वर्तमान में
होने के बावजूद
नहीं हो पाने की यह विडम्बना मेरे प्रभु
मेरे ही लिए क्यों
मेरे ही लिए क्यों सेन्ट्रल-होटल की दूरी सात समुद्र से सेन्ट्रल होटल
चौदह नदियों की दूरी बनती है
क्यों नहीं है मेरे लिए कोई नाम कोई नदी कोई चिड़िया कोई फूल
कोई सिद्धान्त
कोई दरख्त कोई राजनीतिक दल कोई जंगल
कोई साँप कोई गाँव
कोई स्त्री कोई सड़क कोई संगीत कोई नशा कोई प्रेम कोई घृणा
कोई घर कोई आँगन कोई छाँव
वापस लौट जाऊँ मैं जहाँ एक बार फिर से अपनी यात्रा
शुरू करने के लिए
क्यों नहीं है मेरे लिए जीने में अथवा अन्ततः मर जाने में कोई कारण
कोई सत्य कोई न्याय कोई आकर्षण
जब कि अपने अस्तित्व अपने अनस्तित्व का संपूर्ण निर्णय
मैंने छोड़ देना चाहा था
अपनी उग्रतारा पर कविता से पहले
और मृत्यु से पहले भी छोड़ देना चाहा था शंकाहीन-अर्थहीन जीवन
और मरण का अंकगणित सँभालने के लिए
···श्रीचक्र के प्रस्फुटित कमल पर काममुद्रा में खड़ी
वह आदिकन्या
मैंने छोड़ देना चाहा था अपना शिथिल शरीर उसके पाँवों के समीप
निर्णय के लिए अथवा समर्पण

अब मेरे जख्मी घुटनों से अपना चेहरा उठाकर मुझे बताओ कब तक मैं
अपने जासूसों अपने पड़ोसियों अपने रक्त में
तीर्थस्नान करते हुए देवताओं से मुक्त हो पाऊँगा या नहीं
मेरी सड़कें मेरी शिराएँ मेरा यह छोटा-सा देह-नगर फोरसीटर विज्ञापनों

नकली दवाओं से
दैनिक समाचारपत्रों डी० आई० आर० आम-चुनाव पुलिस-कानूनों से
कैन्सर संसदीय अधिनायकवाद आकाशवाणी से
ऋणात्मक अर्थतन्त्र ट्रैफिक की लाल-हरी-पीली बत्तियों से छुटकारा
अवकाश स्वाधीनता विच्छिन्न रहने की
सुविधा
कभी पाएगा या नहीं तुम मुझे बताओ राजकमल चौधरी मुझे बताओ
इस ऑपरेशन-टेबुल पर निर्जीव पड़े हुए
तुम्हारे शरीर से निकलकर मैं अपने लिखने पढ़ने
सोने रहने के कमरे में
किसी दिन जा पाऊँगा या नहीं
छत से झूलती हुई रेशमी रस्सी में अपने सपनों और अपने नीलू का
हिंडोला-झूला टाँगने के लिए
अपने शरीर से मुक्ति दो मुझे अपने शहर अपनी दुनिया में
चले जाने दो

······सत्तर रुपयों का यह कमरा मेरा कमरा रहने दिया नहीं गया था
आवाजें
दरवाजे तोड़ने लगी थीं
झनझनाती थीं खिड़कियों के शीशे तानाशाह रोशनी सर्चलाइटों की
साइरन की लम्बी जहरीली चीखों के बाद
फौजी स्वर में हर दफा कोई गरजता है बाहर चले आओ
अभी बम गिरेगा बाहर चले आओ अभी अकाल-दुर्भिक्ष पड़ेगा बाहर
चले आओ अभी फटेगी ज्वालामुखी यह शहर
भस्म हो जाएगा
बाहर चले आओ सुरक्षा-खाइयों में छिपने के लिए
इस अपाहिज बेशर्म आवाज को मुझसे जोड़ने के लिए डाकघर अखबार
टेलीफोन दवा की दूकानों मनिआर्डर
उम्र के गर्म दिन बेचने वाली स्त्रियों आकाशवाणी के
कार्यक्रमों का महाजाल
जिसने बुना है
कोई शिकायत नहीं है मुझे उससे कोई शिकायत नहीं है उन लोगों से मुझे
जो न्यूजप्रिन्ट पर लिख रहे हैं मेरे देश का इतिहास
अथवा मेरे शरीर का आख्यान टेम्प्रेचर-चार्ट पर

कोई शिकायत नहीं···
शहर के फुटपाथों पर मैं अफीम और प्रकाशकों की तलाश में
घूमता था अकेला और चुपचाप
अपने बेरोजगार दोस्तों के साथ पीकर 50-नम्बर रिक्शेवालों रिफ्यूजी-
स्त्रियों
विधायकों पाठ्यपुस्तक-विक्रेताओं सरकारी ठेकेदारों से
झगड़ता हुआ
गंगानदी के घाट पर खड़े होकर अस्पताल और अदालत के यात्रियों से लदे
दोमंजिले स्टीमर और सुबह के धुँधलके से ऊपर उभरता हुआ
सूरज चुरा ले भागने की योजनाएँ
अपने छोटे भाइयों को समझाते रहना घृणा करनी चाहिए
वेतनभोगी शिक्षकों विवाहित महिलाओं से
लिखते रहना अपने इलाके के राज्यमन्त्री के लिए भाषण परिवार-नियोजन
पंचसाला आयोजनों पर लेख
मैं चला जाता था बाँसघाट-श्मशान अथवा ईसाई ग्रेवयार्ड
किसी सफेद चबूतरे पर रात काटने के लिए
———कोई शिकायत नहीं थी मुझसे नगर-वासियों को पुलिस को
और अखबारनवीसों को
लेकिन
अचानक एक रात ब्लैकआउट में बेहोश इस नगर के आदिम अँधेरे में
मैंने उसे देख लिया शहीद-स्मारक के नीचे
रोते हुए वह नंगी थी और खून से लथपथ थी और वह
कराहती हुई भागी जा रही थी
गलियों में मरघट में और राजभवनों में पुकारती हुई मेरा ही नाम
बार-बार
गिरती हुई ठोकरें खाती हुई हँसती-खिलखिलाती हुई
मैंने उसे देखा उसके कटे हुए दोनों स्तनों को जोड़कर बनाया गया है
पृथ्वी का गोलाम्बर
और वह बुझे हुए लैम्प पोस्टों को जलाने की कोशिश में
लहूलुहान हो गयी है मैंने उसे देखा
और बार-बार उसके मुँह से अपना ही नाम सुन कर मैं अपने कमरे में
भाग आया
मैं अपनी किताबों और अफीम-गाँजे में बन्द हो गया

वह मेरी बुझी आँखों में
मैं उसके स्तनों के गोलाम्बर में बन्द
अब हम कभी बाहर नहीं आएँगे न साइरन की चीख सुनकर और न ही
राशन खरीदने के लिए
और हम दोनों एक-दूसरे की नींद में सोये हुए थे
जब सर्जिकल अस्पताल की एम्बुलेन्स-गाड़ी हमारे कमरे के सामने आकर
रुक गयी······

धीरे-धीरे ठंढी और सफेद प्रेत-छायाओं से भरने लगा ऑपरेशन-थियेटर
ईश्वर उतरने लगा मेरी अँतड़ियों की चक्करदार सीढ़ियों से नीचे
और नीचे किडनी से ब्लाडर से होकर
मूत्र-मार्ग के भीतरी दरवाजे पर लोहा पीटते हुए हथौड़े से लगातार
दस्तक देता हुआ

एनेस्थेसिया की काली टोपी से ढका हुआ मेरा चेहरा
मेरा अस्तित्व
अपनी अलौकिक नग्नता में डूब गया है
संज्ञाविहीन-ज्ञानहीन
समय अब मेरे लिए केवल नीलापन है केवल नीलापन शून्य है
शून्य है स्थान काल और पात्र गतिहीन आकारहीन

शिकि फू कु कु फू
शिकि शिकि सोकू जे
कु कु सोकू जे
शिकि

अपनी कविता से पहले पाठ करता है यह जेन-मन्त्र एलेन गिन्सबर्ग
आकार से भिन्न नहीं है शून्य शून्य से भिन्न नहीं आकार
आकार ही शून्य है शून्य है साकार·········
एनेस्थेसिया की काली टोपी से ढका हुआ चेहरा गति है
और अगति है
और इतिहास-पुस्तक की तरह खुला हुआ अस्तित्व है और नहीं है
एक ही स्थान एक ही काल एक ही पात्र में
मेरे होने और नहीं होने की इस अनुभूति ने मुझको
उसके पाँवों के नीचे
शिव-मूर्ति स्थापित कर दिया है समाधिस्थ
अब तुम मेरी पूजा करो उग्रतारा मैं सोया हुआ वर्त्तमान हूँ शिव हूँ

तुम्हारा संपूर्ण आत्मनिवेदन
स्वीकारने का एकमात्र मुझको रह गया है अधिकार
तुम्हारे पाँवों के नीचे होकर भी तुम्हारी जिह्वा में तुम्हारे स्तनों में
तुम्हारे योनिमार्ग में
तुम्हारी रक्त-नलिकाओं में तुम्हारे हृदयपिंड में तुम्हारे मांस मज्जा
अस्थियों में
तुम्हारे गर्भाशय में होने का
बार-बार इसी प्रकार होते रहने का अधिकार
मैंने उपलब्ध किया है इस प्रज्ज्वलित श्मसान शीतल हिमखण्ड
ऑपरेशन-बुटेल पर
कविता से पहले और मृत्यु से पहले
तुम मेरी पृथ्वी हो और मैं तुम्हारा इष्टदेवता हूँ और कवि हूँ तुम मुझे
जन्म देती हो और मेरे साथ रमण करती हो
तुम मुझे मुक्त करती हो
और मैं तुम्हें मुक्त करता हूँ अपने मरण में
अपनी कविता में

प्रसंग एक

मृत व्यक्ति कोई भी एक मृत व्यक्ति केवल एक मृत व्यक्ति नहीं है
किसी भी प्रकार
सरकारी ट्रान्सपोर्ट से कुचल दिये गये कुत्ते अथवा तालाब की
सतह पर बिल्ली की फूली हुई
लाश से अधिक कवितामय अधिक सुन्दर अधिक कामोत्तेजक होता है
मृत व्यक्ति
अस्पताल के पलंग में सोया हुआ बेहोश देख कर मुझको
एक अपरिचित स्त्री
मातमपुर्सी के लिए आयी हुई यही कहती थी

प्रसंग दो

मेरा जन्म हुआ था त्रिशूली पहाड़ की मन्त्रसिद्ध गुफा में काली-
मूर्ति के पार्श्व में

सद्य:जात छोड़ कर मुझको चली गयी थी मेरी माँ
ग्रहण करने के लिए जलसमाधि
अपनी मृत्यु के कुछ क्षण पूर्व उसने स्वीकार किया था अपना अपराध
अथच वह वापस आ गयी थी देख कर नीचे घाटी में एकाग्र प्रतीक्षारत
शिशुभक्षी गिद्ध
त्रिशूली गुफा के उस संकेत-पथ पर अतएव बिखरी हुई
चट्टानों में अलग-अलग
बँटा हुआ है मेरा जीवन बावन खण्डों में कटा हुआ मेरी आँखों का आकाश
जिस पथ से भागती हुई मेरी माँ के घुटने
पाँवों की उँगलियाँ तलुवे पिंडलियाँ नुकीली चट्टानों से हो गये थे
लहूलुहान······लहू के छींटे
मेरे आकाश के अलग-अलग टुकड़ों को सूर्यमुखी करते हुए
अब जिन्हें फिर से एक अखण्ड सुमेरु बनाने के लिए मैं एक-एक चट्टान
क्रमशः

राजेन्द्र सर्जिकल अस्पताल के नीचे बहती हुई
गंगानदी में
फेंकता जा रहा हूँ अपनी माँ तीर्थमयी के आरण्यक संस्मरणों में
आकाश के एक-एक टुकड़े अलकनन्दा में
अन्ततः कविता में
वापस चली आने के कारण ही अनिवार्य हो गया था माँ के लिए
वरण कर लेना मृत्यु
अन्ततः कविता में उसे जीवित करने के लिए त्रिशूली गुफा में
मन्त्रसिद्ध मैंने जन्मग्रहण किया है

प्रसंग तीन

प्रत्येक बार होता है प्रकृति के साथ निद्रामयी अचेतन समाधिस्थ प्रकृति
के साथ
बर्बर पैशाची बलात्कार
अब भी मैं रचना चाहता हूँ कोई स्वप्न कोई कविता
रक्त-नलिका से ब्रह्म-नलिका तक कोई यात्रापथ मुझे संभोग करना
होता है
विपरीत-मुख बलत्कृता होकर ही वह मदालसा

सृष्टिध्वजादण्ड धारण करती है अपने षट्चक्र-पथ पर रति-व्याकुल
होकर उत्तत
रचना में योगिनी-सहयोगिनी
स्थान-काल-पात्र की शारीरिक स्थितियों का अगर शीलभंग
करती है मेरी कविता
उसे अब और कुछ नहीं करना चाहिए

प्रसंग चार

सुरक्षा के मोह में ही सबसे पहले मरता है आदमी अपने शरीर के इर्दगिर्द
दीवारें ऊपर उठाता हुआ
मिट्टी के भिक्षापात्र आगे और आगे और आगे बढ़ाता हुआ गेहूँ
और हथियारबन्द हवाईजहाजों के लिए
केवल मोहविहीन होकर ही जब कि नंगा भूखा बीमार
आदमी सुरक्षित होता है

प्रसंग पाँच

अपनी देह-सीमाओं के विषय में ईश्वर के प्रति
एक ही प्रार्थना हो सकती है आधुनिक मनुष्य की व्यक्तिगत प्रार्थना
अपनी मुक्ति के लिए—
संगठन और संस्थाओं के विरुद्ध हो जाना अर्थात शासन-तन्त्र और
सेनाओं के
विरुद्ध हो जाना अपनी इकाई बचाने के लिए एक ही प्रार्थना
वास्तविक जीवन में और कविता में

प्रसंग छह

तेरह हजार वर्ष पहले मेरुदण्ड-पर्वत की काली चट्टानों से तराश ली गई
तेरह वर्ष की एक लड़की का नाम है उग्रतारा
जब कि वह उग्र नहीं है और वह तारा भी नहीं है मेरे लिए केवल
उग्रतारा है

प्रसंग सात

मुक्ति के विषय में सोचता हुआ मैं सो गया था बेहोश लेकिन कसे हुए दो पंजे
मेरा गला दबाने लगे कोई चीख तक नहीं निकलेगी
मेरे कण्ठ-रन्ध्र से···
प्राणरक्षा के लिए अपने शरीर से बाहर निकलकर
मैं सामने दीवार पर नीले कीड़े की तरह चिपक गया पलंग पर छटपटाती
लाश देखता हुआ
मेरे ही दोनों पंजे मेरी गर्दन दबाए जा रहे हैं इसलिए शरीर से
बाहर निकलकर ही मुक्ति के विषय में
निर्णय किया जा सकता है

प्रसंग आठ

आदमी को तोड़ती नहीं हैं लोकतान्त्रिक पद्धतियाँ केवल पेट के बल
उसे झुका देती हैं धीरे-धीरे अपाहिज
धीरे-धीरे नपुंसक बना लेने के लिए उसे शिष्ट राजभक्त देशप्रेमी नागरिक
बना लेती हैं
आदमी को इस लोकतन्त्री संसार से अलग हो जाना चाहिए
चले जाना चाहिए कस्साबों गाँजाखोर साधुओं
भिखमंगों अफीमची रंडियों की काली और अन्धी दुनियाँ में मसानों में
अधजली लाशें नोचकर
खाते रहना श्रेयस्कर है जीवित पड़ोसियों को खा जाने से
हम लोगों को अब शामिल नहीं रहना है
इस धरती से आदमी को हमेशा के लिए खत्म कर देने की
साजिश में

रचनाकाल : फरवरी-जुलाई '66
प्रकाशन : 15 अगस्त '66